अनुवादक के दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक यद्यपि आकार में छोटी है, लेकिन अपनी विषय सामग्री तथा प्रस्तुतीकरण की शैली के आधार पर एक महान कृति कहलाने की अधिकारी हैं। मैं तो यहां तक कह सकता हूं कि प्रोफ़ेसर रामाकृष्णा राव ने जितने प्रभावशाली और यथार्थ रूप में पैग़म्बर-ए-इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जीवनवृत प्रस्तुत किया है और आप के व्यक्तित्व की महानता को रेखांांकित किया है, उस का उदाहरण हिन्दी, अंग्रेज़ी साहित्य में तो क्या उर्दू में भी सुलभ नहीं।

तथापि प्रो० राव ने अन्त में कार्ललायन की जिन पंक्तियों पर अपनी बात समाप्त की है उन से सहमति सम्भव नहीं। यह तो अत्यन्त भ्रामक कथन है कि - 'कोई भी नीतिसंगत और सदाचारी जीवन इस्लाम होगा।'

इस्लाम की तो वही परिभाषा स्वीकार्य होगी जो खुद इस्लाम प्रस्तुत करे। इस्लाम की दृष्टि में ईमान के बिना किसी भी नैतिक जीवन का कोई स्थायी मूल्य नहीं, क्योंकि उससे यह नश्वर जीवन कुछ सुन्दर हो जाए तो हो जाए लेकिन सदैव रहने वाला परलोक का जीवन तो नहीं सुधर सकता। परलोक के जीवन को यथार्थ महत्व न देना बड़ी नादानी होगी क्योंकि इसका अर्थ होगा कि यह मानव जीवन निरूद्देश्य है, और अपूर्ण भी। जब कि हर चीज अपने लक्ष्य, पूर्णता तथा स्थायित्व प्राप्त करने के लिए अग्रसर है। हमें यह मानना होगा कि इस लौकिक जीवन का लक्ष्य भी पूर्णता व स्थायित्व प्राप्त करना है जो कि ज़हिर है इस जीवन में सम्भव नहीं बल्कि इस जीवन के बाद आने वाले स्थायी और त्रुटिरहित लोक अख़िरत - में ही सम्भव हो सकता है।

निस्सन्देह इस्लामी जीवन व्यतीत करने का अनिवार्य फल लौकिक भलाई और उत्थान की प्राप्ति के रूप में सामने आता है, लेकिन लौकिक जीवन में भी इस्लाम का मूल मन्त्र परलोक-आख़िरत-की भलाई है। इस्लाम किसी भी क्षण किसी भी आध्यात्मिक साधना में या किसी भी लौकिक कार्य में अख़िरत की कामयाबी को नज़रअन्दाज़ नहीं करता। यही कारण है कि इस्लाम की इस आधारभूत धारणा को स्वीकार किये बिना इस्लाम कैसा? इस्लाम दुनिया के साथ परलोक की भलाई की भी शिक्षा देता है, 'ऐ हमारे रब! हमें दुनिया की भी भलाई दे और आख़िरत में भी' (क़ुरआन २:२०१)।

ख़ूद नबी साल० ने इस्लाम की जो व्याख्या की है, वह यह है, 'इस्लाम यह है कि तुम यह गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (उपास्य) नहीं, और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो, रमज़ान के रोज़े रखो और यदि क्षमता रखते हो तो अल्लाह के घर का हज्ज करो।' कहने की जरूरत नहीं कि चीज़ों से खाली कोई भी जीवन, कोई भी आचार संहिता इस्लाम नहीं।

अनुवाद करते समय इस बात का यथासम्भव प्रयत्न किया गया है कि विद्वान लेखक का मन्तव्य और उन के भाव ज्यों के त्यों हिन्दी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किये जा सकें। यह कार्य जाहिर है मेरे लिए इस लिए बड़ा कठिन था कि इस्लाम का पथिक होने के नाते मैं भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रति कुछ न कुछ श्रद्धा तो रखता ही हूं। लेकिन मैंने अनुवाद को अपनी इस श्रद्धा और प्रेमभाव के प्रभाव से बचाने का सतत प्रयत्न किया है। आशा है कि हिन्दी जगत में इस पुस्तक का समुचित स्वागत हो सकेगा।

-अनुवादक

इस्लाम के पैग़म्बर

मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

-प्रोफेसर के.एस. रामाकृष्णाराव

मुहम्मद (सल्ल०) का जन्म, अरब की मरूभूमि में मुस्लिम इतिहासकारों के अनुसार, २० अप्रैल सन् ५७१ ई को हुआ। 'मुहम्मद'का शाब्दिक अर्थ है, 'अति प्रशंसा प्राप्त।' मैं समझता हू कि उन का व्यक्तित्व, अरब के सपूतों में सब से महान है। क्या आप से पहिले और क्या आप के बाद, लाल रेत की इस अभेदय मरूस्थली में जन्मे सभी शासकों व शायरों की अपेक्षा आप का प्रभाव कहीं अधिक व्यापक है।

जब आप प्रकट हुए, अरब उप-महाद्वीय मात्र रेगिस्तान था-तुच्छ और बै-हक़ीक़त शून्य। मुहम्मद के धुरन्दर आत्मबल ने रेगिस्तान के इस शून्य से एक नया संसार निर्मित किया। एक नये जीवन, एक नयी सभ्यता एवं संस्कृति को संजोया और एक ऐसे नये राज्य की स्थापना की, जिस की सीमाएं मराकश से लेकर इंडीज तक फैली हुयी थीं, और जिसने तीन महाद्वीपों- एशिया, अफ़रीक़ा और यूरोप - की जीवन प्रणाली एवं विचार पद्धति को प्रभावित किया।

मैंने जब पैग़म्बर मुहम्मद के बारे में लिखने का इरादा किया, तो पहले तो मुझे संकोच हुआ, क्योंकि यह एक ऐसे धर्म के बारे में लिखने का मामला था, जो मेरा धर्म नहीं। यह काम इस लिए भी कठिन है कि एक ही धर्म के अनुयायी परस्पर विरोधी पंथों, मतशालाओं (Schools of thoughts) और फ़िरक़ों में बंटे रहते हैं।

यद्यपि कभी-कभी यह दावा किया जाता है कि धर्म पूर्णतः एक व्यक्तिगत मामला है। लेकिन इस से इन्कार नहीं किया जा सकता कि धर्म में लोक परलोक, दृश्य-अदृश्य, सभी को अपने प्रभाव क्षेत्र में लेने की प्रवृति है। यह किसी न किसी प्रकार, अब या तब, श्रद्धालुओं के अन्तः करण में, उन की आत्मा, उन के मस्तिष्क, उन के चेतन, अर्धचेतन व अचेतन में, सारांश यह कि उन के सम्पूर्ण अस्तित्व में अन्तभूर्त एवं समाविष्ट हो जाता है। यह समस्या उस समय और अधिक गम्भीर और अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है जब इस बात की गहरी अनुभूति भी मौजूद हो कि हमारा भूत, भविष्य और वर्तमान सब के सब एक अत्यन्त कोमल, जटिल, संवेदनशील रेशमी सूत्र से बंधे लटक रहे हैं। यदि हम कुछ ज्यादा ही संवेदनशील हुये तो फिर हमारे सन्तुलन केन्द्र के सदैव ही अत्यन्त तनावपूर्ण रहने और विचलित होने की स्थिति में रहने की बहुत अधिक सम्भावना रहती है। इस दृष्टि से देखा जाए, तो दूसरों के धर्म के विषय में जितना कम बोला जाए उतना ही अच्छा है। हमारी धार्मिक धारणाओं को बहुत ही गहराई में छुपा रहना चाहिए, हृदय की अंतरतम गहराइयों में क़िलाबन्द और ऊपर से हमारे होठों पर कभी न टूटने वाली सीलें भी लगी होनी चाहिए।

लेकिन समस्या का एक दूसरा पहलू भी है। मनुष्य समाज में रहता है और हमारा जीवन चाहे-अनचाहे, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दूसरे लोगों से जुड़ा होता है। हम एक ही धरती का अनाज खाते हैं, एक ही चल स्रोत का पानी पीते हैं और एक ही वायुमंडल की हवा में सांस लेते हैं। ऐसी दशा में भी, जब कि हम अपने निजी विचारों व धार्मिक धारणाओं पर अडिग हों, यदि हम थोड़ा बहुत यह भी जान लें कि हमारा पड़ोसी किस तरह सोचता है, उस के मुख्य प्रेरणा स्रोत क्या है? तो इस जानकारी से कुछ और नहीं तो अपने पड़ोसियों के साथ उचित सम्बन्ध विकसित करने में अवश्य सहायता मिलेगी। इस दृष्टि से देखा जाए तो आपसी समझ-बूझ को विकसित करने तथा अपने निकट और दूर के पड़ोसियों को ठीक-ठीक और ज्यादा बेहतर ढंग से समझने के लिए संसार के सभी धर्मों के विषय में जानकारी प्राप्त करना बड़ा जरूरी है।

इस के अतिरिक्त हमारी कल्पनाएं व धारणाएं और विश्वास ऐसे बिखरे बिखरे नहीं है जैसा कि वे ऊपर से दिखाई देते हैं। वास्तव में वे कुछ केन्द्रों के गिर्द धनीभूत होते हैं। ये केन्द्र हैं - महान विश्व धर्म एवं जीवन्त विचारधाराएं - जो इस धरती पर बसे करोड़ों लोगों को प्रेरित करनी हैं और उनका मार्ग निश्चित करती हैं। अतः यदि हम इस संसार काआदर्श नागरिक बनाना चाहते हैं तो, एक तरह से यह हमारी ज़िम्मेदारी भी है कि हम उन महान धर्मों और दर्शनों को समझने की थोड़ी बहुत कोशिश ज़रूर करें जो मानव जीवन पर शासन करते हैं।

इन आरमभिक टिप्पणियों के बावजूद धर्म का मैदान अत्यन्त संवेदनशील है। इस में कई अत्यन्त नाजुक

मुक़ाम आते हैं जहाँ फरिश्ते भी कदम रखते हुए डरते हैं। इस में ठोकर खाने और फिसल कर गिरने की भी बहुत सम्भावना रहती है अतः इस में संभल-संभल कर कदम रखने का बार-बार निर्देश दिया जाता है।

मेरे इस लेख का विषय एक ऐसे धर्म की मूल धारणाएं, मान्यताएं तथा उनका मानव समाज पर पड़ा प्रभाव है, जो खुद भी एक ऐतिहासिक धर्म है तथा जिस का पैगम्बर भी ऐतिहासिक व्यक्तित्व का मालिक है। सर विलियम म्यूर जैसा इस्लाम का कटु आलोचक भी क़ुरआन के विषय में लिखता है, 'शायद संसार में कोई अन्य पुस्तक नहीं है जिसका मूल रूप (Text) बारह (अब चौदह) सदियों तक इस प्रकार सुरक्षित रहा हो।' मैं इस में इतना और बढ़ सकता हूँ: पैग़म्बर मुहम्मद ऐसे अकेले ऐतिहासिक व्यक्तित्व हैं जिन के जीवन की एक-एक घटना को बड़ी सावधानी से बिल्कुल शुद्ध रूप में पूरे विस्तार के साथ आने वाली नसलों के लिए सुरक्षित कर लिया गया है।' उन का जीवन, उनके कारनामे, उसके कथन रहस्यों के गहन परदों में छुपे हुए नहीं हैं। सही-सही जानकारी प्राप्त करने के लिए सर खपाने और भठकने की जरूरत नहीं। सत्य रूपी मोती प्राप्त करने के लिए ढेर सारी रास ले भूसा उड़ा कर चन्द दाने प्राप्त करने जैसे कठिन परिश्रम की जरूरत नहीं हैं।

मेरा कार्य इस लिए और असान हो गया है कि अब वह समय तेजी से गुज़र रहा है जब कुछ राजनैतिक व अन्य संकुचित उद्देश्यों एवं कारणों से बहुत से आलोचक इस्लाम का ग़लत और भ्रामक चित्रण किया करते थे। प्रोफेसर बीबंग 'केम्बरिज मेडिवल हिस्ट्री'(Cambridge Madieval History)

नामक पुस्तक में लिखते हैं, 'इस्लाम और मुहम्मद के सम्बन्ध में १६वीं सदी के आरम्भ से पूर्व यूरोप में जो पुस्तकें प्रकशित हुई उन का महत्व अब 'विचित्र साहित्यिक कृत्य' मात्र रह गया है।'

मेरे लिए यह जीवन चरित्र प्रस्तुत करना इस कारण और सुविधाजनक हो गया है कि अब हम सामान्यतः भ्रामक इतिहास का सहारा लेने के लिए मज़बूर नहीं हैं। अब यह इंगित करने में देर नहीं लगती कि हम इस्लाम को कहां से ग़लत रूप देकर प्रस्तुत कर रहे हैं। उदाहरणस्वरूप अब किसी भी उल्लेखनीय क्षेत्र में इस्लाम और तलवार की बात निःसंकोच रूप से नहीं दोहराई जाती। इस्लाम का नियम कि 'धर्म के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं,' आज सब पर भलीभांति विदित है। विश्व विख्यात इतिहासकार गिबन लिखता है, 'मुस्लमानों पर यह घातक धारणा ग़लत तौर से थोपी जाती रही है कि 'हर धर्म को तलवार की धार से उखाड़ फैंका जाएं। जहालत और पक्षपात से युक्त यह आरोप,' गिबन आगे लिखते हैं; 'क़ुरआन की शिक्षाओं और मुस्लिम विजेताओं के ऐतिहासिक वृतान्तों तथा ईसाईयों की पूजा पाठ के प्रति उन की ओर से क़ानूनी और व्यावहारिक सहिष्णुता से पूर्णतः खंडित हो जाता है।' मुहम्मद को जीवन की महानतम सफलता बिना तलवार उठाए विशुद्धरूप से अपने आत्मबल और चरित्र के प्रभाव से प्राप्त हुयी।

एक कबीले के मेहमान का उंट दूसरे क़बीले की चारगाह में ग़लती से चले जाने की छोटी सी घटना से उत्तेजित होकर जो अरब चालीस वर्ष तक ऐसे भयानक रूप से लड़ते रहे थे कि दोनों पक्षों के कोई सत्तर हजार आदमी मारे गये, और दोनों क़बीलों के पूर्ण विनाश का भय पैदा हो गया था, उस उग्र क्रोधातुर और लड़ाकू क़ौम को पैगम्बर मुहम्मद ने आत्म संयम एवं नियम बद्धता की एसी शिक्षा दी, ऐसा प्रशिक्षण दिया कि वे युद्ध के मैदान में भी अल्लाह के आदेश का पालन करें यहा तक कि नमाज तक न छोड़े।

विरोधियों से सहमति और सद्भाव के लिए अप ने बार-बार प्रयास किये लेकिन जब सबी प्रयास विफल हो गये और विशुद्ध रूप से अपनी रक्षा की मजबूरी आप को युद्ध के मैदान में खींच लायी तो, आपने रण नीति को भी एक नया रूप दिया। आप के जीवन काल में अनेक सशस्त्र संघर्ष हुए जिन के परिणामस्वरूप पूरा अरब उप-महाद्वीप आप के झंडे तले आ गया। लेकिन उन सब संघर्षों में काम आने वाली इन्सानी जानों की संख्या चन्द सौ से अधिक नहीं है।

आपने बर्बर अरबों को सर्वशक्तिमान अल्लाह की उपासना - नमाज़ की शिक्षा दी, अकेले-अकेले अदा करने की नहीं बल्कि सामूहिक रूप से अदा करने की। यहां तक कि युद्ध विभीषका के दौरान भी नमाज़ का निश्चित समय आने पर - और यह दिन में पांच बार आता है - सामूहिक नमाज़ (नमाज़ जमाअत के साथ) का परित्याग करना तो दूर उस के निश्चित समय को टाला तक नहीं जा सकता। एक गिरोह अपने खुदा के सामने सज्दे में सिर झुकाने में तथा दूसरा शत्रु से जुझने में व्यस्त रहता। जब पहला समूह नमाज़ पढ़ लेता तो वह दूसरे का स्थान ले लेता और दूसरा खुदा के सामने झुक जाता।

बर्बरता के युग में रणभूमि को भी मानवीय आधारों पर ढाला गया। लाशों के अंग भंग न करने, धोखा न देने,

विश्वासघात न करने, ग़बन न करने, बच्चों और स्त्रियों को क़त्ल न करने, फलदार वृक्षों को न काटने और जलाने, धर्मस्थानों का निरादर न करने तथा इबादत में व्यस्त लोगों को न छेड़ने के लिए कड़े आदेश दिया गये। अपने कट्टर से कट्टर विरोधियों के प्रति खुद पैग़म्बर साहब का व्यवहार आप के अनुयायियों के लिए विशाल हृदयता का महान आदर्श है। मक्का पर अपनी विजय के समय आप अपनी अधिकार शक्ति की पराकाष्ठा पर आसीन थे। वह नगर जिसने आप के उपदेशों को सुनने से साफ़ इंकार कर दिया था, जिसने आप को और आप के साथियों को यन्त्रणाएं दी, जिसने आप को और आप के सम्बन्धियों व साथियों को देश निकाला दिया, जिसने आप का और आप के क़बीले का बहिष्कार किया तथा जिस ने आप के दो सौ मील से भी ज्यादा दूरनगर में आश्रय ले लेने के बावजूद निष्ठूरता से निरन्तर सताने का सिलसिला जारी रखा, आज (मक्का की विजय के दिन) आप के चरणों में पड़ा था। युद्ध के नियमों के अनुसार उस सारी क्रूरता का, जिस का लक्ष्य स्वयं आप और आप के साथी रहे, बदला लेने का आप को पूरा हक हासिल था। लेकिन आपने इस नगर वालों के साथ कैसा व्यवहार किया? मुहम्मद के हृदय में समोयी हुआ दया भाव उमड़ पड़ा और प्रेम अमृत छलक पड़ा। आपने घोषणा की। 'आज तुम पर कोई आरोप, कोई ताड़ना नहीं तुम सब स्वतन्त्र हो।'

आत्म रक्षा में युद्ध की अनुमति देने के मुख्य लक्ष्यों में से एक यह भी था कि मानव को एकता सूत्र में पिरोया जाए। अतः जब यह लक्ष्य पूरा हो गया तो बदतरीन शत्रुओं को भी क्षमा कर दिया गया। यहां तक कि उन लोगों को भी माफ़ कर दिया गया जिन्होंने आप के चहीते चाचा 'हमज़ा' को क़त्ल कर के उन के शव को विकृत किया, अपमानित किया और पेट चीर कर कलेजा निकाल कर चबाया।

आपने विश्वव्यापी भ्रातृत्व तथा सर्वजन समान के जिन धर्म सिद्धान्तों की उद्घोषणा की तथा अपने अनुयायियों को शिक्षा दी वे मानवता के सामाजिक उत्थान में मुहम्मद के अति महान योगदान के परिचायक हैं। यद्यपि अन्य बड़े धर्मों ने भी इन सिद्धान्तों व नियमों की शिक्षा दी हैं, लेकिन इस्लाम के पैग़म्बर ने इन को व्यावहारिक रूप देकर प्रस्तुत किया। इस योगदान का नैतिक मूल्य शायद उस समय पूरी तरह समझा जा सकेगा जब अंतर्राष्ट्रीय चेतना जाग जाएगी, जातिगत विभेद और पूर्वाग्रह पूर्ण तरह मिट जाएंगे और मानव भ्रातृत्व की धारणा वास्तविकता बन कर सामने आयेगी।

इस्लाम के इस पहलू पर विछार व्यक्त करते हुए सरोजनी नायडू लिखती हैं, 'यह पहला धर्म था जिसने जम्हूरियत (लोकतंत्र) की शिक्षा दी और उसे व्यावहारिक रूप दिया। जब मीनारों से आज़ान दी जाती है और इबादत करने वाले मस्जिदों में जमा होते हैं, उस समय इस्लाम की जम्हूरियत साकार हो उठती है। राजा और रंक एक पंक्ति में साथ-साथ झुक जाते हैं और एलान करते हैं, 'केवल अल्लाह ही महान है।' भारत की महान कवियत्री आगे लिखती है, 'मैं इस्लाम की इस अविच्छिन्न एकता को देख-देख कर जो मानव को नैसर्गिक रूप से भाई-भाई बनाती है आश्चर्यचकित हो उठत हूं। जब आप एक मिस्त्रवासी मुस्लिम से, एक अलजीरिया वासी से, एक भारतीय से, एक तुर्क से लंदन में मिलते हैं, तो इन सब में अन्तर होता है वह केवल यह कि एक की जन्मभूमि मिस्त्र है दूसरे की भारत आदि में। '

महात्मा गांधी अपनी अद्भुत शैली में लिखते हैं 'किसी ने लिखा है कि दक्षिणी अफ्रीका में गोरे इस्लाम के प्रसार विस्तार से भयभीत हैं। इस्लाम से! जिसने स्पेन को सभ्यता दी, जिसने मारकश तक ज्ञान की रोशनी पहुंचायी तथा संसार को भाईचारे का पवित्र संदेश दिया। दक्षिणी अफ्रीकी में गोरो इस्लाम के उदय बस इसलिए भयभीत हैं कि मूल अफ्रीकी इन गोरों से समानता की मांग कर सकते हैं। उन का इस से डरना ठीक ही है। यदि भाईचारा एक पाप है, यदि काली नसलों की गोरों से बराबरी ही वह चीज़ है जिससे वे डर रहे हैं, तो फिर (इस्लाम के प्रसार से) उन के डरने का कारण भी समझ में आ जाता है।'

दुनिया हर वर्ष हज्ज के अवसर पर रंग नसल तथा जाति आदि के भेदभाव को मिटा डालने के इस्लाम के चमत्कारपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय भव्य प्रदर्शन को देखती है। यूरोपवासी ही नही , बल्कि अफ्रीक़ी, फ़ारसी, भारतीय, चीनी आदि सभी मक्का में एक ही दिव्य परिवार के सदस्यों के रूप में एकत्र होते हैं, लेकिन वे सभी एक ही प्रकार के वस्त्र में लिपटे होते हैं। हर व्यक्ति बग़ैर सिली दो सफेद चादरों में, एक कमर पर बंधी हुई तथा दुसरी कंधे पर पढ़ी हुई, सिर खुले हुए, किसी दिखावे बनावट के बिना और बार-बार ये शब्द कहते हुए 'मैं उपस्थित हूं, हे खुदा में तैरी आज्ञा के पालन के लिए उपस्थित हूं , तू एक है और तेरा कोई शरीक नहीं अतः वहां ऊँचे-नीचे में विभेद करने का कोई कारक शेष नहीं रहता। तथा हर हाजी इस्लाम के अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का आभास लिए घर वापस लौटता है।

प्रोफेसर हुर्गरोन्ज के शब्दों में , 'पैग़म्बरे इस्लाम द्वारा स्थापित राष्ट्रसंघ ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एकता और मानव भ्रातृत्व के नियमों को ऐसे सर्वकालिक आधारों पर स्थापित किया है जो अन्य राष्ट्रों को मार्ग दिखाते रहेंगे।' वह

आगे लिखता है, 'वास्तविकता यह है कि राष्ट्र-संघ की धारणा को मूर्त रूप देने के लिए इस्लाम ने जो योगदान दिया है, कोई भी अन्य राष्ट्र उसकी मिसाल प्रस्तुत नहीं कर सकता।

पैग़म्बरे इस्लाम ने लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली को उसके उत्कृष्टतम रूप में स्थापित किया। ख़लीफ़ा उमर और ख़लीफ़ा अली, (जो कि पैग़म्बरे इस्लाम के दामाद थे) खलीफ़ा मन्सूर और अब्बास, जो खलीफ़ा मामून के पुत्र थे तथा कोई दुसरे ख़लीफ़ाओं (राज्य अध्यक्षों) और मुस्लिम सुल्तानों को एक साधारण व्यक्ति की तरह इस्लामी अदालतों में उपस्थित होना पड़ा। हम सब जानते हैं कि काले नीग्रो लोगों के साथ आज भी 'सभ्य' सफेद रंग वाले कैसा व्यवहार करते हैं? फिर आप आज से १४ शताब्दी पूर्व इस्लाम के पैग़म्बर के समय के एक काले नीग्रो बिलाल के बारे में अन्दाजा कीजिए। इस्लाम के आरम्भिक काल में नमाज़ के लिए अज़ान देने की सेवा को अत्यन्त आदरणीय व सम्मानजनक पद समझा जाता था और यह आदर इस ग़ुलाम नीग्रो को प्राप्त था। मक्का पर विजय के पश्चात् उन को आदेश दिया गया कि नमाज़ के लिए अज़ान दें और यह काले रंग और मोटे होंठों वाला नीग्रो गुलाम इस्लामी जगत के सब से पावन एवं ऐतिहासिक भवन, पवित्र काबा, की छत पर चढ़ गया। उस समय कुछ अभिमानी अरब चिल्ला उठे, 'आह बुरा हो उसका, वह काला हब्शी ग़ुलाम अज़ान के लिए पवित्र काबा की छत पर चढ़ गया है।'

घमंड एवं पूर्वाग्रह, जिनको मिटा देना पैग़म्बरे के मूल उद्देश्यों में से एक उद्देश्य था, के इस अनायास प्रस्फोटन को ही सम्भवत लक्ष्य करते हुए पैग़म्बर मुहम्मद ने एक खुत्बा दिया जिसमें फ़रमाया-

'सारी प्रशंसा और शुक्र अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें अज्ञान काल के अभिमान और अन्य बुराइयों से छुटकारा दिया। ऐ लोगों याद रखो कि सारी मानव जाति केवल दो श्रेणियों में बटी है: धर्मनिष्ठ और अल्लाह से डरने वाले लोग जो कि अल्लाह के यहां सम्मानित हैं। दूसरे वे उल्लंघनकारी, अत्याचरी, अपराधी और कठोर हृदय लोग जो खुदा की निगाहों में गिरे हुए और तिरस्कृत हैं। अन्यथा सभी लोग एक आदम की औलाद हैं और अल्लाह ने आदम को मिट्टी से पैदा किया था।'

इसी बात की पुष्टि क़ुरआन में इस प्रकार कर दी गई है -

'ऐ लोगों हमने तुम को एक पुरूष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हारी विभिन्न जातियां व वंश बनाये ताकि एक दूसरे को पहचानों, निस्सन्देह अल्लाह की दृष्टि में तुम में सबसे अधिक सम्मानित वह है जो खुदा से सबसे ज्यादा डरने वाला है। निस्सन्देह अल्लाह ख़ूब जानने वाला और पूरी तरह भिज्ञ हैं। (हुजुरात)

इस प्रकार पैग़म्बर इस्लाम हृदयों में ऐसा ज़बरदस्त परिवर्तन लाने में सफल हो गये कि सबसे पवित्र व सम्मानित समझे जाने वाले ख़ानदानों के अरबों ने भी इस नीग्रो गुलाम का जीवन साथी बनाने के लिए अपनी बेटियों से विवाह करने का प्रस्ताव किया। इस्लाम के दूसरे ख़लीफ़ा जो इतिहास में उमर महान् (फारूक़) के नाम से प्रसिद्ध हैं, जो मुसलमानों के प्रशासक और राजप्रमुख थे, इस नीग्रो को देखते ही सम्मानार्थ खड़े हो जाते और इन शब्दों में उनका स्वागत करते, 'हमें ज्ञान सिखाने वाले आते हैं, हमारे स्वामी आते हैं' धरती पर उस समय की सबसे अधिक स्वाभिमानी कौम, अरबों में क़ुरआन और पैग़म्बर मुहम्मद ने कितना महान् परिर्वतन कर दिखाया था ! यही कारण है कि जर्मनी के महानतम कवि गोयटे पवित्र कुरआन के विषय में अपने उद्गार प्रकट करते हुए ऐलान करते हैं कि 'यह पुस्तक सभी कालों में लोगों को सबसे अधिक प्रभावित करती रहेगी।' इसी कारण जार्ज बनार्ड शा कहते हैं - 'यदि अगले सौ वर्षों में इंग्लैण्ड ही नहीं बल्कि पूरे यूरोप पर किसी धर्म के शासन कर सकने की सम्भावना है तो वह इस्लाम है।'

इस्लाम की यही लोकतांत्रिक प्रवृति है जिसने स्त्री को पुरूष के बन्धनों से आज़ादी दिलायी। सर चार्ल्स ई.ए. हेमिल्टन लिखते हैं, "इस्लाम मानवता को सिखाता है कि वह मूलतः पापाचार से मुक्त है। वह सिखाता है कि स्त्री और पुरूष दोनों एक ही तत्व से बने हैं, उनकी मिट्टी एक ही है, तथा बौद्धिक, आत्मिक एवं आध्यत्मिक उन्नति के लिए एवं सिद्धि प्राप्त करने के लिए दोनों को समान क्षमता प्रदान की गई हैं।"

अरबों में यह सुदृढ़ प्रथा थी कि विरासत का अधिकारी वही बनता जो बरछा व तलवार चलाने में सिद्धहस्त होता (अर्तात शारीरिक रूप से बलवान होता-अनुवादक) लेकिन इस्लाम कमज़ोर वर्ग (स्त्री) का रक्षक बन कर उभरा और उसने स्त्री को विरासत में हिस्सेदार बनाया। उसने आज से सदियों पूर्व स्त्री को सम्पति का अधिकार दिया। उसके बाद कहीं बारह सदियों बाद १८८१ ई० में उस इंग्लैण्ड में, जो लोकतन्त्र का उद्गम एवं पोषक केन्द्र समझा जाता है, इस्लाम की इस संस्थागत प्रथा को अपनाया गया और इसके लिए 'दि मैरीड वीमन्स एक्ट' (विवाहित स्त्रियों का अधिनियम)

नामक क़ानून पास हुआ। लेकिन इस घटना से १२ सदी पूर्व पैग़म्बरे इस्लाम यह घोषणा कर चुके थे, 'स्त्री-पुरूष के जोड़े में स्त्री द्वितीय आधा है। स्त्री के अधिकार पावन हैं'-'ध्यान रखो कि स्त्रियां अपने निश्चित अधिकार प्राप्त कर पा रही है (या नहीं?)'

इस्लाम प्रत्यक्ष रूप में तो राजनैतिक और आर्थिक व्यवस्था कोई सरोकार नहीं रखता, लेकिन परोक्ष रूप में, जहां तक यह मामले मानव व्यवहार को प्रभावित करते हैं, बस उस सीमा तक दोनों क्षेत्रों में निस्सन्देह वह कई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण नियम प्रतिपादित करता है। प्रोफ़ेसर मेसिंगटन के अनुसार 'वेह दो अति सीमाओं के बीच सन्तुलन स्थापित करता है तथा चरित्र निर्माण का, जो कि सभ्यता की बुनियाद है, सैदव ध्यान रखता है।' इसकी ज़मानत पाने के लिए उसने विरासत के क़ानून, ख़ैरात की अव्यवस्थित नहीं बल्कि व्यवस्थित और नियमित पद्धति 'ज़कात'का क़ानून लागू किया । अर्थिक जीवन में सभी समाज विरोधी प्रक्रियाओं जैसे, एकाधिकार, सूद, बिना कमाई आमदनियों व लाभों को पहले ही निश्चित करलेने, जमाख़ोरी करने, बाज़ार का सारा सामान ख़रीद कर क़ीमतें बढ़ाने के लिए कृत्रिम अभाव पैदा करने आदि कामों को अवैध घोषित करके समाज विरोधी गातिविधियों के विरूद्ध जमानत प्राप्त की है। जुवा भी अवैध ठहराया गया। जबकि शिक्षा संस्थाओं, इबादतगाहों, तथा चिकित्सालयों को सहायता देने, कुवां खोदने, यतीमख़ाने स्थापित करने को पुण्यतम कार्य घोषित किया। कहा जाता है कि यतीमख़ानों की स्थापना का आरम्भ पैग़म्बरे इस्लाम की शिक्षा प्रेरणा से ही हुआ। आज का संसार अपने यतीमख़ानों की स्थापना के लिए इसी पैग़म्बर का आभारी है जो कि खुद यतीम था। कारलायल मुहम्मद साहब के विषय में अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहता है, 'यह सब भलाइयों बताती हैं कि प्रकृति की गोद में पले बढ़े इस मरुस्थलीय पुत्र के हृदय में, मानवता, दया एवं समता के भाव का नैसर्गिक वास था।'

एक इतिहासकार का कथन है कि व्यक्ति की महानता का निश्चय तीन मापदण्डों द्वारा किया जाना चाहिए । क्या उसके समकालीन लोगों ने उसको साहसी तेजस्वी और उच्च आचरण का पात्र पाया? क्या उसने अपने युग के स्तर से ऊंचा उठने में उल्लेखनीय महानता का परिचय दिया? क्या उसने सामान्यत : पूरे संसार के लिए अपने पीछे कोई स्थाई धरोहर छोड़ी? महानता की कसौटियों की इस तालिका को और लम्बा किया जा सकता है। लेकिन जहां तक पैग़म्बर मुहम्मद का सम्बन्ध है वे जांच की इन कसौटियों पर पूर्णतः खरे उतरते हैं। अन्तिम दो बातों के सम्बन्ध में कुछ प्रमाणों का पहिले ही उल्लेख किया जा चुका है।

इन तीन मापदण्डों में पहला है, क्या पैग़म्बरे इस्लाम को आपके समकालीन लोगों ने तेजस्वी, साहसी और उच्च आचरण वाला पाया था?

ऐतिहासिक दस्तावेदज़ें साक्षी हैं कि क्या मित्र क्या विरोधी, हज़रत मुहम्मद के सभी समकालीन लोगों ने जीवन के सभी मामलों व सभी क्षेत्रों में पैग़म्बरे इस्लाम के उत्कृष्ट गुणों, आप की निष्कलंक ईमानदारी, आपके महान् नैतिक सदगुणों तथा आपकी निर्द्वन्द्व व असीम निश्छलता व सत्यवादियता और विश्वसनीयता को स्वीकार किया है। आपकी विमल निष्पक्षता को यहूदी तक स्वीकार करते थे, हालांकि उन्होंने आपके धर्म सन्देश को क़बूल नहीं किया था। लेकिन वे अपने आपसी व निजी विवादों में और झगड़ों में आपको निर्णायक के रूप में स्वीकार करते थे। वे लोग भी जो आपके सन्देश पर ईमान नहीं रखते थे, यह कहने पर विवश थे-'हे मुहम्मद हम तुमको झूठा नहीं कहते बल्कि 'उस'का इनकार करते हैं जिसने तुम को एक किताब (क़ुरआन) दी तथा तुमको एक सन्देश से उत्प्रेरित किया।'उनका विचार था कि आपको किसी (अदृश्य शक्ति जिन्न भूत आदि) ने अपने वश में कर रखा है। जिससे छुटकारा दिलाने के लिए वे आपके विरुद्ध हिंसा तक पर उतर आये। लेकिन समाज के श्रेष्ठ व उच्च व्यक्तियों ने देखा कि आपके ऊपर एक नयी ज्योति उदित हुई है और वे उस ज्ञानोदय को अपनाने के लिए लपक पड़े। पैग़म्बरे इस्लाम के जीवन इतिहास की यह विशेषता उल्लेखनीय है आपके निकटतम रिश्तेदार, आपके प्रिय चचेरे भाई, आपके घनिष्ट मित्र, जो आपको बुहत निकट से जानते थे, आपके मिशन की सच्चाई से पूर्णतः प्रभावित हुए और आपको प्राप्त दिव्य निर्देश की यथार्थता एवं सच्चाई पर पूर्ण रूप से ईमान ले आये। मुहम्मद पर ईमान ले आने वाले ये कुलीन, शिक्षित एवं बुद्धिमान स्त्रियां और पुरूष मुहम्मद के व्यक्तिगत जीवन से भली भांति परिचित थे। वे आपके व्यवितत्व में यदि धोखेबाज़ी और फ्राड की तनिक झलक भी देख पाते या आप में धन लोलुपता देखते या आप में आत्मविश्वास की कमी पाते तो आप की चरित्र निर्माण, आत्मिक जागृति तथा समाजोद्धार की सारी आशाएं धवस्त होकर रह जातीं। एक नये भवन के निर्माण के लिए खड़ा किया गया सारा ढांचा एक क्षण में धराशायी हो जाता। इसके विपरीत हम देखते हैं कि आपके अनुयायियों की निष्ठा और आपके प्रति उनके समर्पण का यह हाल था कि उन्होंने स्वेच्छा से अपना जीवन आपको समर्पित करके आपका नेतृत्व स्वीकार कर लिया । उन्होंने आपके लिए यातनाओं और ख़तरों को झेला, आप पर ईमान लाये, आपका विश्वास किया, आपकी

आज्ञाओं का पालन किया, दिल दहला देने वाली कठोरतम यातनाओं के बावजूद उन्होंने आपका हार्दिक सम्मान और आज्ञापालन किया तथा सामाजिक बहिष्कार से उत्पन्न घोर मानसिक यन्त्रणा को शान्तभाव से सहन किया। यहां तक कि मौत को भी स्वीकार कर लिया। क्या यह सब कुछ उस स्थिति में भी सम्भव होता यदि वे अपने नेता में लेशमात्र भी भ्रष्टता या अनैतिकता पाते ?

आरम्भिक काल में इस्लाम स्वीकार करने वालों के ऐतिहासिक वृतान्त पढ़िये तो इन निरापराध एवं निरीह लोगों पर ढाये गये अमानुषिक अत्याचारों को देखते हुए कौन-सा हृदय है जो द्रवित न होगा? एक मासूम स्त्री सुमैया को निर्दयता के साथ बरछे मार-मार कर हलाक कर डाला गया। एक उदाहरण यासिर का भी है जिनकी टांगों को दो ऊंटो से बांध दिया गया, और फिर उन ऊंटों को विपरीत दिशा में हांका गया। ख़ब्बाब बिन अरत को धधकते हुए कोयलों पर लिटा कर निर्दयी ज़ालिम उनके सीने पर खड़ा हो गया ताकि वे हिलडुल न सके यहां तक कि उनकी खाल जल गयी और चर्बी पिघल कर निकल पड़ी। और ख़ब्बाब बिन अदी के गोश्त को निर्ममता से नोच-नोच कर तथा उनके अंग काट-काट कर उनकी हत्या की गयी। इन यातनाओं के बीच उनसे पूछा गया, क्या वे यह न चाहेंगे कि उनके स्थान पर पैग़म्बर मुहम्मद होते? (जोकि उस समय अपने परिवार के साथ अपने घर में थे) तो असहनीय यातना से पीड़ित ख़ब्बाब चिल्ला उठे कि पैग़म्बर मुहम्मद को एक कांटा चुभने के कष्ट से बचाने के लिए वे अपनी जान, अपने बच्चों एवं प्रियजनों की जान, अपना सर्वस्व क़ुरबान करने के लिए तैयार हैं। इस प्रकार के दिल दहलाने वाले बहुत से वृतान्त प्रस्तुत किये जा सकते हैं। लेकिन यह सब घटनाएं आख़िर क्या सिद्ध करती हैं? ऐसा कैसे हो सका कि इस्लाम को समर्पित इन स्त्रियों और पुरूषों ने अपने पैग़म्बर के प्रति न केवल हार्दिक आदर का प्रमाण दिया बल्कि आप की सेवा में अपने दिल व जान तथा अपने अस्तित्व और अपनी जान रूह तक का नज़राना पेश कर दिया? पैग़म्बर मुहम्मद के प्रति उनके निकटतम अनुयायियों की यह दृढ़ आस्था और विश्वास, क्या उस कार्य के प्रति, जो पैग़म्बर मुहम्मद के सुपुर्द किया गया था, उनकी ईमानदारी, निष्कपक्षता तथा तन्मयता का अत्यन्त उत्तम प्रमाण नहीं हैं?

ध्यान रहे कि ये लोग न तो निम्न श्रेणी के थे और न क्षीण बुद्धि वाले। आपके मिशन के आरम्भिक काल में जो लोग आपके चारों ओर जमा हुए वे मक्का के श्रेषठतम लोग थे। वे मक्का के सर्वोत्तम और कुलीनतम व्यक्ति, उच्च पदवी प्राप्त तथा धनवान एवं सुसंकृत लोग थे। उनमें आपके खानदान और परिवार के क़रीबी लोग भी थे जो आपके जीवन के ढके-छुपे सभी पक्षों से परिचित थे। आरम्भ के चारों ख़लीफ़ा (राज्य प्रमुख) भी, जो कि महान् व्यक्तित्व के मालिक हुए, आरम्भिक काल ही में इस्लाम स्वीकार करने वालों में से हैं।

'इन साइक्लों पीडियो बिरटानीका' में उल्लिखित हैं, 'समस्त पैग़म्बरों और धार्मिक क्षेत्र के महान् व्यक्तित्वों में मुहम्मद सबसे ज्यादा सफल हैं।' लेकिन यह सफलता उनको मात्र संयोगवश नहीं मिली। न ऐसा ही है कि यह आसमान से अचानक आ गिरी हो, बल्कि यह उस वास्तविकता का फल थी कि आपके समकालीन लोगों ने आपके व्यक्तित्व को साहसी और निष्कपट पाया। यह आपके प्रशंसनीय और अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व का फल था।

मुहम्मद के व्यक्तित्व की सभी यथार्थताओं का जान लेना बड़ा कठिन कार्य है। मैं तो उसकी बस कुछ झलकियां ही पा सका हूं। उनके व्यक्तित्व के कैसे-कैसे मन-भवन दृश्य निरन्तर नाटकीय प्रभाव के साथ सामने आते हैं? मुहम्मद के अनेकों रूप हैं। उनके विभिन्न रूप- मुहम्मद पैग़म्बर, मुहम्मद जनरल, मुहम्मद शासक, मुहम्मद योद्धा, मुहम्मद व्यापारी, मुहम्मद उपदेशक, मुहम्मद दार्शनिक, मुहम्मद राजनीतिज्ञ, मुहम्मद वक्ता, मुहम्मद समाज सुधारक, मुहम्मद यतीमों के पोषक, मुहम्मद गुलामों के रक्षक, मुहम्मद स्त्री वर्ग का उद्धार करने और उन को बन्धनों से मुक्त कराने वाले, मुहम्मद न्याय करने वाले, मुहम्मद सन्त। और इन सभी महत्वपूर्ण भूमिकाओं और मानवीय क्रिया-कलापों के विभिन्न क्षेत्रों में मुहम्मद समान रूप से एक औजस्वी वीर नायक हैं।

अनाथ-आवस्था बेचारगी व असहाय स्थिति की चरम सीमा होती है। इस संसार में आपके जीवन का आरम्भ इसी निरस्सहाय स्थिति से हुआ। निरापद सत्ता और स्वतन्त्र राजाधिकार सांसारिक शक्ति उपलब्धि की चरम सीमा होती है। मुहम्मद साहब के सांसारिक जीवन का अन्त इसी चरम सीमा पर हुआ। आपने अपना जीवन अनाथ, व्यथित और सताये हुए विस्थापित की दशा से आरम्भ किया और एक पूरे राष्ट्र के आध्यात्मिक एवं लौकिक अधिपति, तथा उनके भाग्य के मालिक के रूप में समाप्त किया। वे इस मार्ग में आने वाली सभी परीक्षाओं और प्रलोभनों में, कठिनाइयों और परिवर्तनों में, अंधेरे सायों और रोशन राहों में, ऊंचनीच और भय एवं सम्मान के अवसरों पर, दुनिया से लोहा लेने की कड़ी से कड़ी परीक्षा में, सारांश यह कि जीवन के हर क्षेत्र में हर हाल में एक निष्कलक नायक व उच्च उदाहरण के रूप

में उभरे। उनकी सफलताएं जीवन के किसी एक पहलू तक सीमित नहीं, बल्कि मानव जीवन के एक-एक क्षेत्र पर विस्तृत व व्याप्त हैं।

यदि यह समझा जाए कि बर्बरता से ग्रस्त नितांत चारित्रिक अन्धकार में डूबी किसी क़ौम को उस बबेरता और अन्धकार से निकालना महानता है, तो फिर वह प्रेरणादायक शक्तिस्वरूप व्यक्तित्व-मुहम्मद-इस महानता के निरस्सन्देह पात्र है कि उस ने अरबों जैसे पतित राष्ट्र का उद्धार किया, उस को ऊंचा उठाया, उसकी काया पलट की तथा उसको ज्ञान एवं सभ्यता का पथ प्रदर्शक बनाया। निरस्संदेह वे महानता का दावा करने के पूरे अधिकारी हैं। यदि महानता इसमें हैं कि किसी समाज के परस्पर विरोधी और बिखरे हुए तत्वों को भाई चारे और दयाभाव के सूत्रों द्वारा बांध दिया जाए तो मरुस्थल में जन्मे पैग़म्बर निस्संदेह इस विशिष्टता एवं प्रतिष्ठा के पात्र हैं। यदि महानता उन लोगों का सुधार करने में हैं जो अमानवोचित अन्धविश्वासों तथा इस प्रकार की हानिकारक प्रथाओं और आदतों में ग्रस्थ हों, तो पैग़म्बरे इस्लाम ने लाखों लोगों के दिलों को विवेकहीनता के ख़तरों और अन्धविश्वासों से निजात दिलाई। यदि महानता उच्च आचरण पर आधारित होती है तो शत्रओं और मित्रों दोनों ने मुहम्मद साहब को अल-अमीन और अस-सादिक़, विश्वसनीय एवं सत्यवादी स्वीकार किया है। यदि एक विजेता महानता का पात्र है तो वे एक ऐसे व्यक्ति हैं जो अनाथ एवं असहाय और साधारण व्यक्ति की स्थिति से उभरे और खुसरो वे क़ैसर की तरह अरब उप महाद्वीप के स्वतन्त्र शासक बने। आपने एक ऐसा महान राज्य स्थापित किया जो १४ सदियों की लम्बी मुद्दत गुज़र जाने के बावजूद आज बी जीवित है। और यदि महानता का मापदंड वह समर्पण है जो किसी नायक को उसके अनुयायियों से प्राप्त होता है तो आज भी सारे संसार में फैली करोड़ों आत्माओं को मुहम्मद का नाम जादू की तरह सम्मोहित करता है।

उन्होंने एथेन्स, रोम, फ़ारस (ईरान) भारत या चीन के ज्ञान केन्द्रों से दर्शन का ज्ञान प्राप्त नहीं किया था, लेकिन उन्होंने मानवता को चिरस्थायी महत्व की उच्चतम वास्तविकताओं से परिचित कराया। वे निरक्षर पे लेकिन उनको ऐसा अर्थपूर्ण, भावपूर्ण और उत्साहपूर्ण शैली में भाषण करने की योग्यता प्राप्त थी कि श्रीतागण भावविभोर हो उठते और उनकी आंखों से आंसू फूट पड़ते। वे अनाथ थे और धनहीन भी, लेकिन जन-जन के हृदय में उनके प्रति प्रेमभाव था। उन्होंने किसी सैन्य अकादमी में शिक्षा ग्रहण नहीं की थी लेकिन फिर भी वे भयंकर कठिनाइयों और रुकावटों के बावजूद सैन्य शक्ति जुटा कर उसे सुव्यवस्थित करने में सफल हुए और अपनी आत्मशक्ति के बल पर, जिसमें आप अग्रणी थे, इस जीवन संघर्ष में विजय प्राप्त की। ईशप्रदत्त एवं विलक्षण क्षमता एवं नैतिकता वाले धर्मोपदेशक यदा-कदा ही मिलते हैं। डेकार्ड के अनुसार, ‘आदर्श उपदेशक संसार के दुर्लभतम प्राणियों में से है’ हिटलर ने भी अपनी पुस्तक ‘Mein Kamp’ (मेरी जीवन गाथा) में इसी तरह का विचार व्यक्त किया है। वह लिखता है, ‘महान सिद्धान्त शास्त्री यदा-कदा ही महान नेता होता है। आन्दोलनकारी प्रवृति के लीडरों में यह गुण और भी कम होता है। वह एक बेहतर नेता तो अवश्य होगा, क्योंकि नेतृत्व का अर्थ होता है आवाम को प्रभावित एवं संचालित करने की क्षमता। नये-नये विचार प्रस्तुत करने की प्रतिभा तथा जन-नेतृत्व की क्षमता में कोई चीज़ उभयनिष्ठ नहीं है।’ लेकिन वह आगे कहता है, ‘सिद्धान्त शास्त्र, संयोजन, संगठन तथा नेतृत्व की क्षमताएं किसी एक व्यक्ति में जमा हो जाना इस दुनिया की दुर्लभतम उपलब्धि है। यह तो महानता का लक्षण है।’ पैग़म्बरे इस्लाम मुहम्मद के व्यक्तित्व में संसार ने इस दुर्लभतम उपलब्धि को सजीव एवं साकार होते देखा है।

इस से भी अधिक विस्मयकारी है वह टिप्पणी जो रीव बासवर्थ स्मिथ ने की है, ‘वे जैसे संसारिक राज्यसत्ता के प्रमुख थे, वैसे ही दीनी पेशवा भी थे। मानो पोप और क़ैसर दोनों का व्यक्तित्व उन अकेले में एकीभूत हो गया था। वे सीज़र (बादशाह) भी थे और पोप (धर्मगुरु) भी। वे पोप की शान शौकत के बिना धर्मगुरू थे, और वे ऐसे राजा थे जिन के पास राजसी ठाठ-बाट, आगे-पीछे अंगरक्षक और राजमहल न थे, न राजस्व प्राप्ति की व्यवस्था। यदि कोई व्यक्ति यह कहने का अधिकारी है कि उसने दैवी अधिकार से राज किया, तो वे मुहम्मद ही हो सकते हैं कि उन्हें बाह्म साधनों और सहायक चीज़ों के बिना ही राज करने की शक्ति प्राप्त थी। उन्होंने प्राप्त अधिकार शक्ति के सांसारिक दिखावे की कभी परवाह नहीं की। उन के सार्वजनिक जीवन में भी वही सादगी व्याप्त थी जो उन के व्यक्तिगत एवं धरेलू जीवन में।’

मक्का पर विजय के बाद १० लाख वर्गमील से अधिक क्षेत्र उन के क़दमों में था। वे पूरे अरब के मालिक थे, लेकिन फिर भी वे मोटे-झोटे ऊनी वस्त्रों और जूतों की मरम्मत स्वयं करते, बकरियाँ दूहते, घर में झाडू लगाते, आग जलाते और घर-परिवार के छोटे-मोटे काम भी करते। आपके जीवन के आख़िरी दिनों में पूरा मदीना धनवान हो चुका था। हर जगह सोने-चांदी की बहुतायत थी, लेकिन इस निशिचन्तता एवं बाहुल्य के बावजूद ‘अरब के राजा’ के घर चूल्हे

में कई-कई हफ़्ते तक आग न जलती थी और खजूरों और पानी पर गुज़ारा होता, उन के घर वालों की लगातार कई-कई रातें बिना खाना खाये गुज़र जातीं, क्योंकि उन के पास शाम को खाने के लिए कुछ भी न होता। तमाम दिन व्यस्त रहने के बाद रात को वे नर्म बिस्तर पर नहीं बल्कि खजूर की चटाई पर सोते। वे अपनी रातों का अधिकांश समय नमाज़ में गुज़ारते तथा अपने पैदा करने वाले से अपने लिए कर्त्तव्य पालन की क्षमता माँगते और इस हाल में आँखों से आंसुओं की झड़ी लगी होती। प्राप्त उल्लेखों से पता चलता है कि रोते-रोते आपकी आवाज़ ऐसी घुट जाती मानों बर्तन आग पर रखा हुआ है और उसमें पानी उबल रहा है (अर्थात आपकी हिचकियां बंध जातीं।) आपके देहान्त के बाद आप के विरसे में केवल कुछ सिक्के निकले थे, जिन का एक भाग कर्ज की अदायगी में चला गया और जो सिक्के बाकी बचे वे उस जरूरतमंद को दे दिये गए जो आप के घर धान मांगने आ गया था। जिन वस्त्रों में आपने अंतिम सांस लिए उन पर एक नहीं अनेक पैवन्द लगे हुए थे। वह घर जिसने संसार को उजाला दिया अंधेरा, पड़ा था, क्योंकि दिये में डालने के लिए घर में तेल न था।

परिस्थितियां बदल गई लेकिन खुदा का पैग़म्बर नहीं बदला। विजय प्राप्त हुई हो चाहे हार, वे सत्ताधारी रहे चाहे बेबस और मजबूर, बहुतायत का समय रहा हो चाहे कुछ न होने का। हर हालत में वे एक-से रहे। एक ही जैसा चरित्र एवं आचरण का परिचय देते रहे। सच है दैवी नियम और कानून की तरह खुदा के पैग़म्बर भी सुदृढ़ एवं अपरिवर्तनीय स्वभाव के होते हैं।

एक कहावत है -ईमानदार व्यक्ति अल्लाह की सर्वोच्च कृति हैं। मुहम्मद तो ईमानदार से भी बढ़कर थे। उन के अंग-अंग में मानवता रची बसी थी। इंसानी सहानुभूति, मानवता से प्रेम उन की आत्मा का एक संगीत था। मानव की सेवा, उसका उत्थान, उसे नेक और भला बनाना, उसे शिक्षित करना और एक शब्द में कहा जाए तो मानव को इन्सान बनाना उन के जीवन का ध्येय, उनके संघर्ष का वास्तविक लक्ष्य था। उन का जीना, उन का मरना सब कुछ उसी एक लक्ष्य के लिए अर्पित था। उन के आचार-विचार, वार्त्तालाप एवं क्रियाकलाप का एक मात्र दिशा निर्देशक सिद्धान्त एवं प्रेरणा स्रोत मानवता की भलाई था।

वे अत्यन्त विनीत, हर आडम्बर से मुक्त तथा एक आदर्श निस्स्वार्थी थे। उन्होंने अपने लिए कौन-कौन सी उपाधियां चुनी? केवल दोः अल्लाह का आज्ञाकारी दास और उस का संदेशवाहक। आज्ञाकारी बन्दा पहले और उसका संदेशवाहक (पैग़म्बर) बाद में। वे वैसे ही पैग़म्बर और संदेशवाहक थे जैसे संसार के हर भाग में दूसरे बहुत से पैग़म्बर गुजर चुके हैं। जिनमें से कुछ को हम जानते हैं और कुछ को नहीं। अगर इन सच्चाइयों में से किसी एक से भी ईमान उठ जाए तो आदमी मुसलमान नहीं रहता। यह मुसलमानों की मौलिक धार्मिक मान्यताओं का एक अनिवार्य अंग है।

एक यूरोपीय विचारक का कथन है, 'उस समय की परिस्थितियों तथा उन के अनुयायियों की उन के प्रति असीम श्रद्धा को देखते हुए मुहम्मद की सब में बड़ी विचित्रता यह है कि उन्होंने कभी भी मोजज़े (चमत्कार) दिखा सकने का दावा नहीं किया।' आप से कई चमत्कार जाहिर हुए, लेकिन उन चमत्कारों का प्रयोजन धर्म प्रचार न था। उन का श्रेय आपने स्वयं न लेकर पूर्णतः अल्लाह को और उस के उन अलौकिक तारीक़ों को दिया जो मानवीय बुद्धि की पकड़ में नहीं आते। वे स्पष्ट शब्दों में कहते थे कि वे भी आम इंसानों की तरह ही मात्र इन्सान हैं। न उन्होंने दुनिया या जन्नत के खज़ानों का दावा किया, न उन्होंने कभी यह दावा किया कि वे भविष्य की अज्ञात चीज़ों (परोक्ष या ग़ैब) का ज्ञान रखते हैं। यह सब कुछ उस काल में हुआ जबकि आश्चर्यजनक चमत्कार दिखाना मामूली घटना समझा जाता था और यह विश्वास आम था कि संत पुरुष बिना किसी कठिनाई सरलता-पूर्वक चमत्कार दिखा सकते हैं। यह उस समय की बात है जब पूरा अरब और अरब के बाहर का सारा वातावरण अस्वाभाविक अंधविश्वासों से ग्रस्त था।

उन्होंने अपने अनुयानियों का ध्यान प्रकृति और उस के नियमों के अध्ययन तथा उन में व्याप्त ख़ुदा की महानता पर विचार करने की ओर फेर दिया। क़ुरआन कहता है-

'और हमने आकाशों व धरती को और जो कुछ उन के बीच है कुछ खेल के तौर पर नहीं बनाया। हमने इन्हें बस हक़ के साथ पैदा किया परन्तु इनमें अधिकतर लोग (इस बात को) जानते नहीं। (दुख़ानः ३८-३९)

यह लोक न तो कोई भ्रम है और न निरुद्देश्य। बल्कि सत्य और हक़ के साथ पैदा किया गया है। क़ुरआन की उन आयतों की संख्या जिन में प्रकृति का अध्ययन और मनन करने को आमंत्रित किया गया है उन सब आयतों से कई गुना अधिक हैं जो नमाज़, रोज़ा, हज्ज आदि आदेशों से सम्बन्धित हैं। इनसे प्रेरणा पाकर मुसलमानों ने प्रकृति का निकट से निरीक्षण करना आरम्भ किया। जिसने अध्ययन एव निरीक्षण के लिए ऐसी वैज्ञानिक मनोवृति को जन्म दिया जिससे यूनानी भी अनभिज्ञ थे। मुस्लिम बनस्पति शास्त्री इब्नबेतार ने संसार के सभी भू-भागों से पौधे एकत्र करके बनस्पति शास्त्र

पर वह पुस्तक लिखी जिसे मायर ने अपनी पुस्तक 'Gesh der Botanica' में 'कड़े श्रम की पुरातन निधि' की संज्ञा दी है। अलबेरूनी ने चालीस वर्षो तक यात्रा करके खनिज पदार्थी के नमूने एकत्र किये, तथा मुस्लिम खगोलशात्रियों ने १२ वर्षो से भी अधिक अवधि तक निरीक्षण एवं अध्ययन कर के अनेक सिद्धांत निकाले जबकि अरस्तू ने एक भी वैज्ञानिक परीक्षण किये बिना भौतिक शास्त्र पर क़लम उठाया। प्रकृित के इतिहास पर लिखते समय उसने अत्यन्त लापरवाही से काम लिया 'इन्सान के दांत जानवर से ज़्यादा होते हैं' जैसे आसानी से निश्चित किये जा सकने वाले तथ्य के विषय में भी बिना परीक्षण के अपना बयान दे दिया।

शरीर रचना-शास्त्र के सब से बड़े पंड़ित जलीनूस ने लिखा है कि नीचे का जबड़ा दो हड्डियों से मिल कर बना होता है। इस कथन को सदियों तक बिना चुनौती असंदिग्ध रूप से स्वीकार किया जाता रहा यहां तक कि एक मुस्लिम विद्वान अब्दुल लतीफ़ ने एक मानवींय कंकाल का स्वयं निरीक्षण करके सही बात से दुनिया कों अवगत कराया। इस प्रकार कीं अनेकों घटनाओं को उद्धृत करते हुए राबर्ट पीरफ़्फ़ाल अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'The Making of Humanity' 'मानवता का सर्जन' में अपने उद्गार इन शब्दों में व्यक्त करता है -

"The debt of our Science to the Arabs doest not consist in startling discoveries or revolutionay theories. Science owes a great deal more to the Arab culture: it owes its existeuce".

'हमारे विज्ञान पर अरबों का आभार केवल उन की आश्चर्यजनक खोजों या क्रान्तिकारी सिद्धांतों एवं परिकल्पनाओं तक सीमित नहीं है बल्कि विज्ञान पर अरब सभ्यता का इससे कहीं अधिक उपकार है, वह अपने अस्तित्व के लिए उसकी आभारी है।' यही लेखक लिखता है, 'यूनानियों ने व्यवस्थापन, क्रमबद्धता एवं वर्गीकरण, नियमीकरण और सामान्यीकरण तथा सिद्धांत पद्धति को जन्मदिया, लेकिन जहां तक खोज-बीन करने के धैर्यपूर्ण तरीक़ो का पता लगाने, निश्चयात्मक एवं स्वीकारत्मक तथ्यों को एकत्र करने, वैज्ञानिक अध्ययन के सूक्षम तरीक़े निर्धारित करने व्यापक एवं दीर्घ-कालिक अवलोकन व निरीक्षण करने तथा परीक्षणात्मक अन्वेषण करने का प्रश्न है, ये सारी विविष्टिएं यूनानी प्रवृति के प्रतिकूल थी। जिसे आज विज्ञान कहते हैं खोजबीन की नयी विधियों, परीक्षण के तरीक़ों, अवलोकन व निरीक्षण की पद्धति नाप तोल के तरीकों तथा गणित के विकास के परिणामस्वरूप यूरोप में उभरा, उस के इस रूप से यूनानी बिल्कुल अपरिचित थे । यूरोपीय जगत को इन विधियों और इस वैज्ञानिक प्रवृति से अरबों ही ने परिचय कराया।'

पैग़म्बर मुहम्मद की शिक्षाओं का ही यह व्यावहारिक गुण है जिसने वैज्ञानिक प्रवृति को जन्म दिया। इन्हीं शिक्षाओं ने तथाकथित सांसारिक जीवन-क्रियाओं व मेहनत मजदूरी को पवित्रता प्रदान की। क़ुरआन कहता है कि इन्सान को ख़ुदा की इबादत के लिए पैदा किया गया है, लेकिन 'इबादत' (पूजा) की उस की अपनी अलग परिभाषा है। खुदा की इबादत केवल पूजा-पाठ और नमाज़ रोज़े आदि तक सीमित नहीं, बल्कि हर वह कार्य जो अल्लाह की प्रसन्ना प्राप्त करने तथा मानव जाति की भलाई के लिए किया जाए इबादत के अन्तर्गत आता है। इस्लाम ने पूरे जीवन और उससे सम्बद्ध सारे मामलों को पावन एवं पवित्र घोषित किया है, शर्त यह है कि उसे ईमानदारी न्याय और नेकनियती के साथ किया जाय। उसने 'धार्मिक और 'लौकिक' के बीच के दीर्घकालीन भेद को मिटा दिया क़ुरआन कहता है कि यदि तुम पवित्र एवं स्वच्छ भोजन खाकर अल्लाह का आभार स्वीकार करो तो यह भी इबादत है। पैग़म्बर इस्लाम ने कहा है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को खाने का एक कौर खिलाता है तो यह भी नेकी और भलाई का काम है और अल्लाह इस का सुफल देगा। पैग़म्बर सहाब का एक और कथन उद्धत किया गया है - अगर कोई व्यक्ति अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए कोई काम करता है तो उसे भी अल्लाह इनआम देगा। शर्त यह कि उसने इच्छा तुष्टि के लिए साधन प्राप्त करने तथा तुष्टि के लिए वही तरीक़ा अपनाया है जो वैध है।' एक सहाबी जो आप की बातें सुन रहे तें आश्चर्य से बोले, 'हे अल्लाह के पैग़म्बर वह तो केवल अपनी इच्छाओं, अपने मन की कामनाओं को पूरा कर रहा है। ' आपने उत्तर दिया, 'यदि उसने अपनी ईच्छाओं की पूर्ति के लिए अवैध तरीक़ों व साधनों को अपनाया होता तो उसे इस की सज़ा मिलती, तो फिर जायज़ तरीक़ा अपनाने पर उसे इनआम क्यों नहीं मिलना चाहिए?

धर्म की इस नयी धारणा ने कि 'धर्म का विषय पूर्णतः आलौकिक जगत के मामलों तक सीमित न रहना चाहिए बल्कि इसे लौकिक जीवन के उत्थान पर भी ध्यान देना चाहिए,' नीति शास्त्र एवं आचार-शस्त्र के नये मूल्यों एवं मान्यताओं को जन्म दिया। इस के अतिरिक्त दैनिक जीवन में लोगों के आपसी सम्बन्धों और मामलों पर स्थायी एवं निश्चित प्रभाव, जनता के हृदयों पर गहरा प्रभुत्व, अधिकारों के साथ कर्त्तव्य की धारणा का निर्धारण और अशिक्षत

अनपढ़ तथा बुद्धिमान दार्शनिक दोनों ही के लिए समान रूप से इस्लाम को ग्रहण कर सकने का औचित्य एवं ग्राह्य-गुण आदि पैग़म्बरे इस्लाम की शिक्षाओं की प्रमुख विशेषताएं हैं।

यहां यह बात सतर्कता के साथ दिमाग़ में आ जानी चाहिए कि भले कामों पर ज़ोर देने का अर्थ यह नहीं है कि इस के लिए धार्मिक आस्थाओं की पवित्रता एवं शुद्धता को क़ुर्बान किया गया है। ऐसी बहुत सी विचार धाराएँ हैं, जिनमें या तो व्यावहारिकता के महत्व को बलि देकर आस्थाओं ही को सर्वोपरि माना गया है या फिर धार्मिक आस्थाओं की परवाह न कर के केवल कार्यकलापों को महत्वपूर्ण समझा गया है। इन के विपरीत इस्लाम सत्य आस्था एवं सदकर्म के नियम पर आधारित है। यहां साधन भी उतना ही महत्व रखते हैं जिना लक्ष्य। लक्ष्यों को भी वही महत्ता प्राप्त है जो साधनों को। वे साथ ही जीते और फलते फूलते हैं। उन को अलग-अलग कर दें तो ह्रासोन्मुख होकर एक दिन मृतप्राय हो जायेगा। इस्लाम में ईमान और अमल (विश्वास एवं कर्म) को अलग-अलग नहीं किया जा सकता। सत्य ज्ञान को सत्कर्म में परिणित होना चाहिए ताकि अच्छा फल प्राप्त हो सके। 'जो लोग ईमान रखथे हैं और नेक अमल करते हैं केवल वे ही स्वर्ग में जा सकेंगे' यह बात क़ुरआन में कितनी बार दोहराई गई हैं? इस बात को बार-बार, पचास बार से कम नहीं, दोहराया गया है। ध्यान, प्रार्थना एवं चिन्तन पर उभारा अवश्य गया है लेकिन मात्र ध्यान एवं प्रार्थना ही लक्ष्य नहीं है। जो लोग केवल ईमान रखें लेकिन उस के अनुसार कर्म न करें वे इस्लाम में रह नहीं सकते। जो ईमान तो रखें लेकिन कुकर्म भी करें उनका ईमान शक्तिहीन है। दिव्य कानून विचार पद्धति नहीं बल्कि वह व्यवहार जगत का क़ानून है। यह दीन ज्ञान से कर्म और कर्म से परितोष द्वारा स्थायी एवं शाश्वत उन्नति का पथ दिखलाता है।

लेकिन वह सच्चा ईमान क्या है जिस से सत्कर्म का आविर्भाव होता है, जिस के फलस्वरूप पूर्ण पारितोष प्राप्त होता है? जहां तक इस्लाम का सम्बन्ध है, उस का केन्द्रीय सिद्धान्त हैः 'ख़ुदा का एक होना (तौहीद)' । 'अल्लाह बस एक ही है, उस के अतिरिक्त कोई इलाह नहीं इस्लाम का मूल मन्त्र है। इस की सारी शिक्षाओं एवं क्रियाकलापों का प्रेरणा स्रोत यही मन्त्र है। वह केवल अपने अलौकिक व्यक्तितत्व के कारण ही अद्वितीय नहीं बल्कि अपने दिव्य एवं अलौकिक गुणों एवं क्षमताओं की दृष्टि से भी अनन्य और बेजोड़ है। यह धारणा एक ओर अल्लाह के सर्वथा निर्गुण होने की कल्पना को अस्वीकार करती है, तो दूसरी ओर इस से इस मत का खण्डन हो जाता है कि ईश्वर शरीरधारी और भौतिक पदार्थी के सदृश या भौतिकता से ग्रस्त है। एक ओर क़ुरआन कहता है कि उसे किसी चीज़ के सदृश नहीं ठहराया जा सकता, दुसरी ओर वह इस बात की भी पुष्टि करता है कि वह देखता, सुनता है, जानता और समझता है, वह ऐसा सम्राट है जिस से तनिक भी भूल-चूक नहीं हो सकती। उस की शक्ति का प्रभावशाली जहाज़ न्याय एवं समानता के सागर पर तैरता है। वह अत्यन्त कृपाशील एवं दयावान है वह सर्वोपरि है, सबका रक्षक एवं पोषक है। इस्लाम इस सकारात्मक रूप के प्रस्तुत करने ही पर बस नहीं करता । बल्कि वह समस्या के नकारात्मक पहलू को भी सामने लाता है। जो उसकी अत्यन्त महत्वपूर्ण विशिष्टता है। उस के अतिरिक्त कोई दुसरा नहीं जो सर्वोपरि और सबका रक्षक हो। वह पर टूटे को जोड़ने वाला है उसके अतिरिक्त किसी अन्य में इतनी क्षमता नहीं। वही हर प्रकार की क्षतिपूर्ति करने वाला है। उसके सिवा कोई और उपास्य नहीं । वह हर प्रकार की अपेक्षाओं से परे है। उसी ने शरीर की रचना की, वही आत्माओं का स्रष्टा है। वही महान्याय के दिन का मालिक है। सारांश यह कि क़ुरआन के अनुसार सारे श्रेष्ट एवं महान गुण उस में पाये जाते हैं।

जगत के सम्बन्ध से ब्रह्मांड के सापेक्ष मनुष्य की जो हैसियत है उस के विषय में क़ूरआन कहता है - 'इस धरती में और आकाशों में जो कुछ है ख़ुदा ने तुम्हारे काम में लगा रखा है। तुम्हें सृष्टि पर हुकूमत करने के लिए नियत किया गया।' लेकिन ख़ुदा के सम्बन्ध में क़ुरआन कहता है 'हे मानव, ख़ुदा ने तुमको उत्कृष्ट क्षमताएं प्रदान की हैं। उसने जीवन बनाया और मृत्यु बनाई ताकि तुम्हारी परीक्षा की जा सके कि कौन सुकर्म करता है और कौन सही रास्ते से भटकता है।'

इसके बावजूद कि इन्सान एक सीमा तक अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए स्वतन्त्र है, वह विशेष वातावरण और परिस्थितियों तथा क्षमताओँ के बीच घिरा है। इन्सान अपना जीवन उन निश्चित सीमाओं के अन्दर व्ययीत करने के लिए बाध्य है। उसे उन परिस्थितियों पर कोई नियन्त्रण नहीं है। इस सम्बन्ध में इस्लाम के अनुसार ख़ुदा कहता है, 'मैं अपनी इच्छा के अनुसार इन्सान को उन परिस्थितियों में पैदा करता हूँ जिनको उसके लिए सबसे ज़्यादा उचित समझता हूँ। असीम ब्रह्मांड के रहस्यों को सीमित बुद्धि वाला नश्वर मानव पूरी तरह नहीं समझ सकता। लेकिन में निश्चय ही सुख में और दुख में, तन्दुरुस्ती और बीमारी में, उन्नति और अवनति में तुम्हारी परीक्षा करूँगा। परीक्षा की मेरी विधियों में, हर व्यक्ति, हर अवसर और हर काल में भिन्नता पायी जायेगी। अतः मुसीबत में निराश न हो और नाजायज़ तरीक़ों व साधनों का सहारा न लो। यह तो समाप्त हो जाने वाला समय है। खुशहाली में ख़ुदा को भूल न जाओ।

ख़ुदा के उपहार तो तुम्हें मात्र अमानत (धरोहर) के रूप में दिये गये हैं। तुम हर समय व हर क्षण परीक्षा में हो। जीवन के इस चक्र व प्रणाली के सम्बन्ध में 'तुम्हारा काम यह नहीं कि किसी दुविधा में पड़ो, बल्कि तुम्हारा कर्तव्य तो यह है कि बस कर्म करते हुए जान दो । यदि तुमको जीवन मिला है तो ख़ुदा की इच्छा के अनुसार जियो और मरो तो ख़ुदा की राह में। तुम इसको भाग्य एवं नियति कह सकते हो, लेकिन इस प्रकार के भाग्य का अर्थ है, 'सतत प्रयास,' और यह तुमको हर समय सचेत रखने के लिए है। इस संसार में प्राप्त अस्थायी जीवन को मानव-अस्तित्व का अन्त न समझ लो। मौत के बाद एक और जीवन भी है, जो सदैव बाक़ी रहने वाला है। इस जीवन के बाद आने वाला जीवन वह द्वार है जो जीवन के अदृश्य तथ्यों पर खुलता है। इस जीवन का हर कार्य, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, नित्य शेष रहने वाले प्रभाव को जन्म देता है। हर कार्य का ठीक-ठीक रिकार्ड रखा जा रहा है। ख़ुदा की कुछ कार्य पद्धति को तो तुम समझते हो। लेकिन बहुत सी बातें तुम्हारी समझ से दूर और नज़र से ओझल हैं। खुद तुम्हारे अपने रहस्य और वे चीज़ें जो तुम से आज छुपी हुई हैं, अगले जीवन में तुम्हारे सामने कर दी जायेंगी, और तुम पर बिल्कुल खोल दी जायेंगी। सदाचारी और नेक लोगों को ख़ुदा का वह वरदान प्राप्त होगा जिस को न आँख ने देखा, न कान ने सुना, और न ही मानव के हृदय को उसकी अनुभूति हो सकी है। उसके प्रसाद और उसके वरदान क्रमशः बढ़ते ही जायेंगे और उसको अधिकाधिक उन्नति प्राप्त होती रहेगी। लेकिन जिन्होंने इस जीवन में मिले अवसर को खो दिया वे उस अनिवार्य क़ानून की पकड़ में आ जायेंगे जिसके अन्तर्गत मनुष्य को अपने करतूतों का मज़ा चखना पड़ेगा। उनको उन आत्मिक रोगों के कारण, जिनमें उन्होंने खुद अपने आप को ग्रस्त किया होगा, कठोर व्यवहार का सामना होगा। सावधान हो जाओ वह बड़ी कठोर व भयानक सज़ा है। जीवन की शारीरिक पीड़ा तो यातना व संतापन है, उसको तो तुम किसी तरह झेल भी सकते हो, लेकिन आत्मिक पीड़ा तो जहन्नम (नरक) है जो तुम्हारे लिए असहनीय होगी। अतः इसी जीवन में अपनी उन मनोवृत्तियों का मुक़ाबला करो जिनका झुकाव गुनाह की ओर रहता है और वे तुम्हें पापाचार की ओर प्रेरित करती हैं। तुम उस अवस्था को प्राप्त करो जबकि तुम्हारी अन्तरात्मा जागृत हो जाए और नैतिक कहानता प्राप्त करने के लिए विकल हो उठे और अवज्ञा के विरुद्ध विद्रोह करे। इससे तुम्हें आत्मिकशान्ति का मार्ग मिलेगा, अल्लाह की रज़ा का मार्ग और केवल अल्लाह की रज़ा ही में आत्मा का अपना आनन्द भी निहित है। इस स्थिति में आत्मा के विचलित होने की सम्भावना न होगी, संघर्षकाल समाप्त हो चुका होगा, सत्य विजयी और झूठ पराजित होगा। उस समय सारी गुत्थियां सुलझ जायेंगी। तुम्हारा मन दुविधा में नहीं रहेगा, तुम्हारा व्यक्तित्व अल्लाह के प्रति समर्पण-भाव के साथ पूर्णतः संगठित व एकीकृत हो जायेगा। तब सारी छुपी हुई शक्तियां एवं क्षमताएं पूर्णतः स्वतन्त्र हो जायेंगी, और आत्मा को पूर्ण शान्ति प्राप्त होगी, तब ख़ुदा तुमसे कहेगा- 'ऐ सन्तुष्ट आत्मा तू अपने रब से पूरे तौर पर राज़ी हुई, तू अब अपने रब की ओर लौट चल, तू उससे राज़ी है और वह तुझ से राज़ी है, अब तू मेरे (प्रिय) बन्दों में दाख़िल हो जा, और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा।'

यह है इस्लाम की दृष्टि में मनुष्य का परम लक्ष्य कि एक ओर तो वह इस सृष्टि की नेमतों से पूरा-पूरा लाभ उठाये, उन पर आधिपत्य प्राप्त करे, और दूसरी तरफ़ उसकी आत्मा अल्लाह की रज़ा में चैन पाये। केवल ख़ुदा ही उससे राज़ी न हो जाएं बल्कि वह भी ख़ुदा से राज़ी हो। इसके फलस्वरूप उसको मिलेगा चैन और पूर्ण चैन, परितोष, और पूर्ण परितोष, शान्ति और पूर्ण शान्ति । इस अवस्था में ख़ुदा का प्रेम उसका आहार, और जीवन स्रोत के नितान्त रस का आनन्द उसका ध्येय बन जाता है। फिर न तो दुख और कठिनाइयां उसको पराजित एवं वशीभूत कर पाती हैं और न सफलतायें उसको अहंकारी व आत्मशलाधी या अति उल्लासित बना पाती हैं।

थाम्स कारलायल इस जीवन दर्शन के विषय में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए लिखता है, 'और फिर इस्लाम की भी यही मांग है - हमें अपने को अल्लाह के प्रति सर्मापत कर देना चाहिये, हमारी सारी शक्ति उसके प्रति पूर्ण समपर्ण में निहित है। वह हमारे साथ जो कुछ करता है, हमें जो कुछ भी भेजता है, चाहे वह मौत ही क्यों न हो, या उससे भी बुरी कोई चीज़, वह वस्तुतः हमारे भले की और हमारे लिए उत्तम ही होगी। इस प्रकार हम ख़ुद को ख़ुदा की रज़ा के प्रति समर्पित कर देते हैं।' लेखक आगे चलकर गोयटे का एक प्रश्न उद्घृत करता है 'गोयटे पूछता है यदि यही इस्लाम है तो क्या हम सब इस्लामी जीवन व्यतीत नहीं कर रहे हैं?" इसके उत्तर में कारलायल लिखता है, 'हां हम में से वे सब जो कोई नीति संगत व सदाचारी जीवन व्यतीत करते हैं, वे इस्लाम में ही जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यह तो अन्ततः वह सर्वोच्च ज्ञान एवं प्रज्ञा है जो आकाश से इस धरती पर उतारी गयी है।'